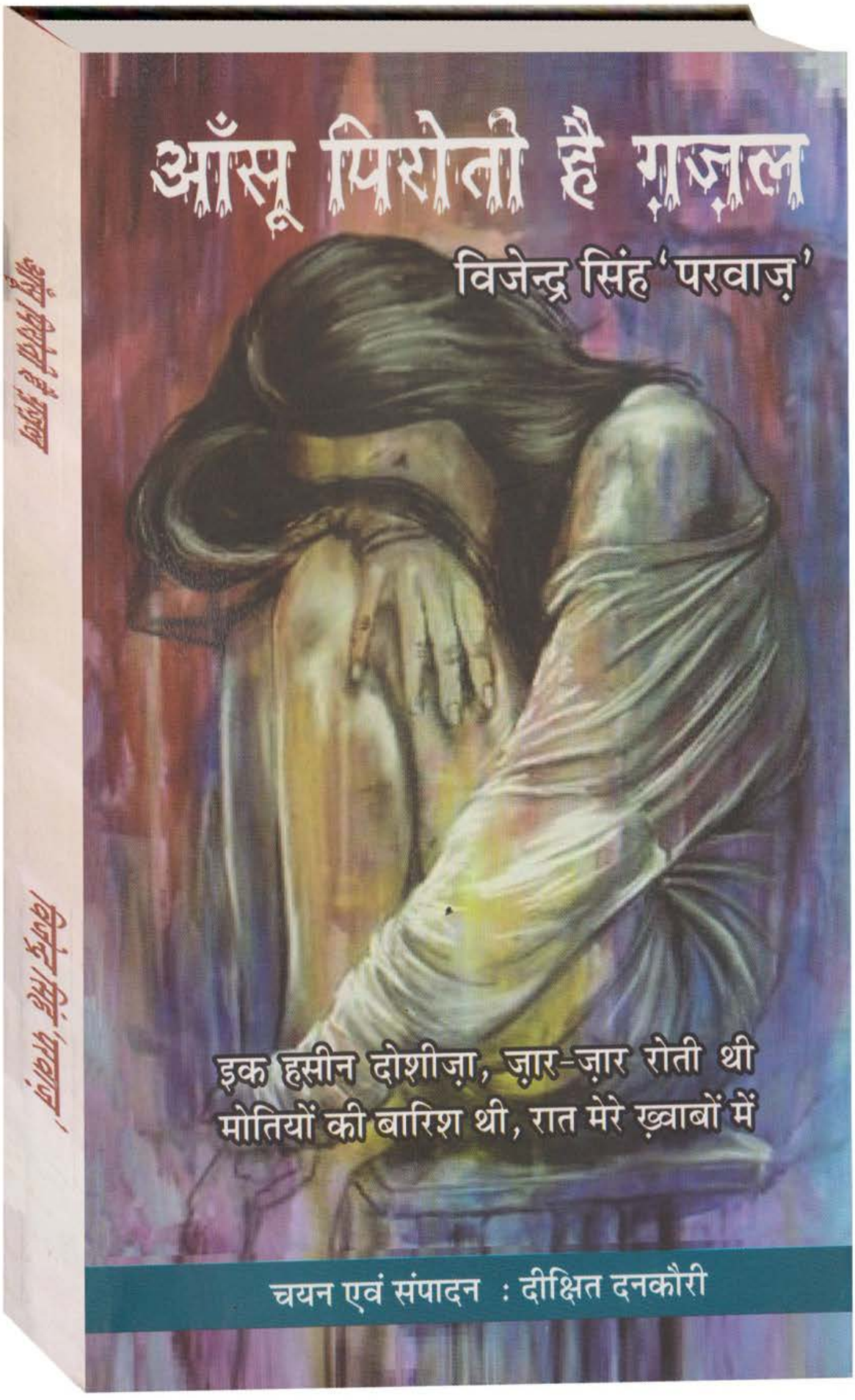

आँसू पिरोती है ग़ज़ल
विजेन्द्र सिंह 'परवाज़'
इक हसीन दोशीज़ा, ज़ार-ज़ार रोती थी
मोतियों की बारिश थी, रात मेरे ख़्वाबों में
चयन एवं संपादन : दीक्षित दनकौरी
आँसू पिरोती है ग़ज़ल
विजेन्द्र सिंह 'परवाज़'